International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.1 Sept-Oct 2023

'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन'

मनोज कुमार गुप्ता[1], प्रो. शोभा गौड़[2]

[1] शोध-छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग

दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)- 273009

[2] अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय

दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)- 273009

Corresponding Author – मनोज कुमार गुप्ता

DOI- 10.5281/zenodo.10250342

शोध-सारांश:

शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मानव की मूलभूत अभिवृतियों, अभिरुचियों, आवश्यकताओं इत्यादि में सकारात्मक संशोधन एवं परिवर्द्धन किया जा सकता है। यह मनुष्य की आकांक्षाओं को उचित दिशा देने का भी कार्य करती है। यदि विद्यार्थियों को शुरू से ही विशेषत: माध्यमिक शिक्षा के स्तर से उनकी व्यावसायिक अभिरुचि के प्रति जाग्रत किया जाये तो आने वाले समय में वे अपने जीवन में अवश्य ही सफल हो सकते हैं तथा अपने लिए उचित व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी कुछ व्यवसायों में बहुत उच्च अभिरुचि रखते हैं जबकि कुछ अन्य व्यवसायों में उनकी अभिरुचि औसत से भी कम थी। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ कि छात्रों और छात्राओं की व्यावसायिक अभिरुचि में सामाजिकता को छोड़कर कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात दोनों की व्यावसायिक अभिरुचि समान पायी गयी।

मुख्य-शब्द: व्यावसायिक अभिरुचि, छात्र, छात्राएं, माध्यमिक स्तर, शिक्षा।

प्रस्तावना:

शिक्षा का उद्देश्य कर्मठ, चरित्रवान, प्रतिबद्ध और आदर्श नागरिकों का निर्माण करना है। यही वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य उचित और अनुचित में विभेद कर सही निर्णय लेता है। यह मनुष्य को उसके जीवन मूल्यों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करती है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में सफलता तथा असफलता के निर्धारण में उसकी शिक्षा-दीक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में जीवन-यापन का उद्देश्य भी एक अति आवश्यक उद्देश्य बन गया है । आज हजारों की संख्या में उच्च शिक्षा-प्राप्त युवा महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से निकलते हैं। परन्तु आवश्यक कुशलता और व्यावसायिक दक्षता के आभाव में वे अपने जीवन-यापन में सफल नहीं हो पा रहे हैं।

वर्तमान समय में हमारी शिक्षा केवल सैद्धांतिक बनकर रह गयी है। उनमे व्यावहारिक पक्ष को उचित स्थान नही मिल पाया है। यही कारण है कि शिक्षित बेरोजगारी की समस्या हमारे देश में बहुत बढ़ गयी है। लाखों की संख्या में आज स्नातक उत्तीर्ण अभ्यर्थी अपने भविष्य के प्रति सशंकित हैं । इसका मुख्य कारण शिक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम और उचित एवं व्यावहारिक शैक्षिक तथा व्यावसायिक निदेशन एवं मार्गदर्शन का अभाव है । व्यावसायिक निदेशन की कमी के कारण हमारे में देश दो प्रकार समस्या उत्पन्न हो गयी है । पहला, एक ओर तो उद्योग, व्यवसाय और सेवा कार्य के लिए पर्याप्त संख्या में कुशल, दक्ष एवं योग्य युवा नहीं मिल पा रहे हैं। फलस्वरूप इन व्यवसायों एवं उद्योगों की प्रगति मंद हो गयी है। दूसरी तरफ, बड़ी संख्या में ऐसे भी युवक है जो शिक्षित तो है परन्तु उनमें व्यवसायिक कुशलता तथा योग्यता का नितांत आभाव है। यही वजह है कि आज व्यवसायपरक शिक्षा देने की वकालत की जा रही है। जिससे छात्रों को शुरू से ही किसी वांछित व्यावसायिक पाठ्यक्रम के प्रति अभिप्रेरित किया जा सके और उनकी व्यावसायिक अभिरुचियों को सकारात्मक दिशा में मोड़ा जा सके जिससे वे आने वाले भविष्य में अपना जीवन-यापन उचित प्रकार से कर सकें और अपने भविष्य को लेकर असुरक्षित न महसूस करें। यदि यह कार्य शिक्षा के माध्यमिक स्तर से त्वरित गति से किया जाये तो छात्र अपने भविष्य-निर्माण में अवश्य ही सफल हो सकेंगे। व्यावसायिक शिक्षा की महत्ता आर्थिक वृद्धि और शैक्षिक विकास की दृष्टि से बहुत ज्यादा बढ़ गयी है। इस तथ्य को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में बहुत पहले ही

स्वीकार कर लिया गया था। इसके माध्यम से व्यावसायिक और शैक्षिक जगत का पुनः संगठन किया जाना संभव हो सका है। अब इस दिशा में सार्थक कदम उठाया जा रहा है। सरकार युवाओं की क्षमता और योग्यता के अनुसार उन्हें शिक्षा देने की व्यवस्था शुरू कर रही है। आज भारत विश्व के सबसे युवा देशों की सूची में उच्चतम् स्थान पर है। यहाँ की युवा-शक्ति की चर्चा सम्पूर्ण संसार में विख्यात है। भारत के युवाओं में अपार संभावनाएं और क्षमताएँ विद्यमान है। वे अपार सकारात्मक ऊर्जा और योग्यता से भरे हुए है। बस आवश्यकता है तो इस बात की है कि उनकी योग्यताओं और क्षमताओं को पहचानकर उसे उचित और सम्बन्धित क्षेत्र में पल्लवित और पुष्पित होने का अवसर दिया जाये। यह कार्य व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा सफलतापूर्वक किया जा सकता है क्योंकि यही वह क्षेत्र है जो छात्रों के भविष्य-निर्माण के लिए आवश्यक संसाधन तथा जमीन उपलब्ध करता है।

माध्यमिक शिक्षा:

माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच एक कड़ी का कार्य करती है। इस स्तर की शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों को उनके वास्तविक जीवन के लिए तैयार किया जाता है। यह शिक्षा सामान्यत: 6 या 7 वर्ष की होती है। किसी-किसी राज्य में इस शिक्षा अवधि को 4 या 5 वर्ष निर्धारित किया गया है। उत्तर प्रदेश में इस शिक्षा की अवधि 4 वर्ष ही माना गया है जो दो भागों में विभाजित है- माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा। माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत कक्षा 9वीं और कक्षा 10वीं को सम्मिलित किया जाता है जबकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत कक्षा 11वीं तथा कक्षा 12वीं को सम्मिलित किया जाता है। इस स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के बाद छात्र/छात्राएं विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं जो उनके व्यावसायिक अभिरुचि एवं क्षमता के अनुसार होती है और आने वाले भविष्य में छात्र/छात्राओं के जीवन-यापन में सहायक होती है जो वर्तमान समय में शिक्षा के प्रमुख लक्ष्यों में से एक मुख्य उद्देश्य है। यह उद्देश्य शिक्षा के 'व्यावसायिक एवं आर्थिक विकास का लक्ष्य' से सीधा सम्बन्ध रखता है। अतः शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर पर शोध-कार्य करने का निश्चय किया गया।

व्यावसायिक अभिरुचि:

सामान्यत: अभिरुचि से तात्पर्य किसी विशेष क्षेत्र या कार्य में जन्मजात इच्छा या रूचि से होता है। जो मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान होती हैं और उसे वह कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। परन्तु कभी-कभी अभिरुचियाँ अर्जित भी की जाती हैं जैसे किसी बालक की रूचि खेलने में होती है तो किसी अन्य बालक की रूचि संगीत सुनने में होती है। इस प्रकार देखा जाये तो भिन्न-भिन्न बालकों की अभिरुचियाँ भिन्न-भिन्न होती है। परन्तु यह भी संभव है कि दो या अधिक बालकों की अभिरुचियाँ समान भी हो सकती हैं। जब यही रूचि या अभिरुचि किसी विशेष व्यवसाय, आर्थिक लाभ या जीविकोपार्जन से जुड़ जाती हैं तो उन्हें व्यावसायिक अभिरुचि कहा जाता है, जैसे व्यापार के प्रति अभिरुचि, शिक्षण-कार्य के प्रति अभिरुचि, प्रशासनिक-सेवा के प्रति अभिरुचि इत्यादि। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों और छात्रों की इन व्यावसायिक अभिरुचियों को प्रारम्भ में ही पहचानकर उन्हें उनकी व्यावसायिक अभिरुचि के अनुसार शिक्षा देना और उसे उचित दिशा देना है। यह बात हमारी नई शिक्षा नीति, 2020 में भी स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर शोधकर्त्ता ने छात्र/छात्राओं की व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन करने का निर्णय लिया।

समस्या-कथन:

किसी अनुसन्धान कार्य में समस्या का कथन करना एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कदम होता है। समस्या के कथन द्वारा ही अध्ययन में प्रयुक्त चरों को पहचाना जाता है तथा उसी के आधार पर उद्देश्यों की प्राप्ति संभव हो पाती है। इसलिए अनुसन्धान समस्या का कथन बहुत ही सावधानीपूर्वक एवं सोच समझकर करना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन की अनुसन्धान समस्या-कथन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है- 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन'

अध्ययन के उद्देश्य:

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कृषि सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कलात्मक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वाणिज्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कार्यकारिणी सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की गृहधारक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की साहित्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कृषि सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कलात्मक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वाणिज्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कार्यकारिणी सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की गृहधारक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की साहित्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएँ :

1. वर्तमान अध्ययन में जनसंख्या के रूप में केवल ऐसे विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया जो गोरखपुर जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ रहे थे।
2. केवल उन्हीं माध्यमिक स्कूलों को शोध में चयनित किया गया जो विद्यालय यू.पी. बोर्ड, प्रयागराज द्वारा संचालित थे।
3. कक्षा बारहवीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ही केवल प्रतिदर्श के लिए चयनित किये गये।

अनुसन्धान-अभिकल्प :

अनुसन्धान अभिकल्प शोध की एक योजना होती है जो यह निश्चित करती है कि शोध के वांछित उद्देश्यों को सुगमतापूर्वक कैसे प्राप्त किया जाये। यह समय एवं धन की बचत करते हुए अनुसन्धान को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध करती है। शोध की प्रकृति के अनुरुप अनुसन्धान अभिकल्प के प्रारूप में भिन्नता पाया जाना स्वाभाविक ही है। वर्तमान अध्ययन के अनुसन्धान अभिकल्प को निम्नांकित ढ़ंग से दिखाया जा सकता है-

अध्ययन-विधि : वर्तमान अध्ययन में विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया जो वर्णात्मक अनुसन्धान का एक प्रकार है।

अध्ययन की जनसंख्या :

शोध कार्यों में जनसंख्या का सामान्य अर्थ इकाइयों के उस समुच्चय से लगाया जाता है, जिसमें कुछ एक समान विशेषताएँ होती हैं और जिनके बारे में शोधकर्त्ता कुछ निष्कर्ष ज्ञात करना चाहता है। वर्तमान अध्ययन के लिए ऐसे विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया जो विद्यार्थी यू.पी. बोर्ड, प्रयागराज से संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन कर रहे थे और ये विद्यालय गोरखपुर जिला में स्थित थे।

प्रतिदर्श :

प्रतिदर्श जनसंख्या का एक ऐसा छोटा अंश होता है जिसमें जनसंख्या की सभी आवश्यक विशेषताएँ कम या अधिक मात्रा में पायी जाती हैं। वास्तव में यह सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतिदर्श के चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया। वर्तमान शोध अध्ययन के लिए कक्षा बारहवीं में पढ़ने वाले 240 विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के तौर पर किया गया जिसमें 120 छात्र एवं 120 छात्राएं थीं।

प्रयुक्त शोध उपकरण:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आकड़ों के संग्रहण के लिए व्यावसायिक अभिरुचि रिकार्ड का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया। इसका निर्माण वी.पी. बंसल एवं प्रो. डी.एन. श्रीवास्तव ने किया था। इस रिकार्ड में व्यावसायिक अभिरुचि के आठ क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनके नाम हैं – कृषि, कलात्मक, वाणिज्यिक, कार्यकारिणी, गृहधारक, साहित्यिक, वैज्ञानिक और सामाजिक। इन सभी व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए विश्वसनीयता क्रमशः .86, .82, .85, .74, .78, .75, .76 और .83 है। प्रत्येक क्षेत्र के लिए अधिकतम कुल प्राप्तांक 16 एवं न्यूनतम कुल प्राप्तांक 0 निर्धारित किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां : प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

- मध्यमान (M)
- मानक विचलन (S.D.)
- क्रांतिक-अनुपात (C.R.) परीक्षण
- आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के कार्य को निम्नलिखित प्रकार से किया गया –

सारणी- 3.1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कृषि सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	5.21	3.51	0.45	0.04	$1.97 =_{(238)}05.$ $2.60 =_{(238)}01.$	असार्थक
छात्राएं	120	5.19	3.43				

उपरोक्त सारणी 3.1 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के कृषि सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 5.21 तथा 5.19, मानक विचलन 3.51 तथा 3.43 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.45 है। इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 0.04 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है। अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कृषि सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

इन छात्रों और छात्राओं की कृषि सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.1 में दिखाया गया है।

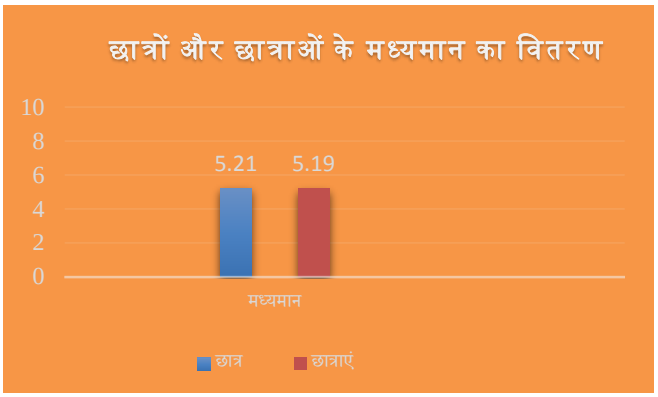

चित्र 3.1

सारणी- 3.2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कलात्मक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	7.89	3.88	0.46	1.22	1.97 $=_{(238)}$05.	असार्थक

उपरोक्त सारणी 3.2 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के कलात्मक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 7.89 तथा 7.33, मानक विचलन 3.88 तथा 3.23 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.46 है। इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 1.22 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है। अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कलात्मक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

इन छात्रों और छात्राओं की कलात्मक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.2 में दिखाया गया है।

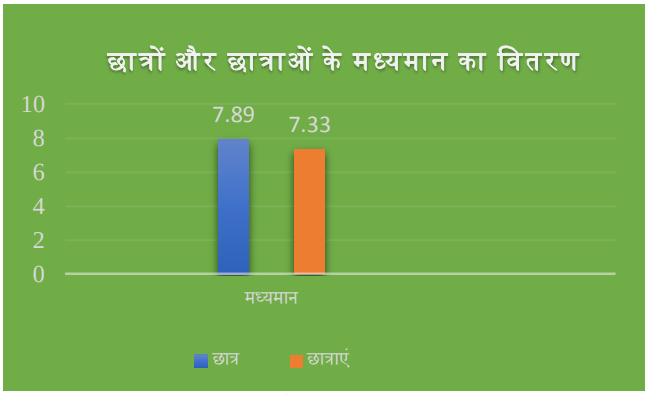

चित्र 3.2

सारणी- 3.3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वाणिज्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	6.09	3.46	0.44	0.52	1.97 $=_{(238)}$05. 2.60 $=_{(238)}$01.	असार्थक
छात्राएं	120	5.86	3.31				

उपरोक्त सारणी 3.3 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के वाणिज्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 6.09 तथा 5.86, मानक विचलन 3.46 तथा 3.31 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.44 है । इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 0.52 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है । अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है । इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वाणिज्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है ।

इन छात्रों और छात्राओं की वाणिज्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.3 में दिखाया गया है ।

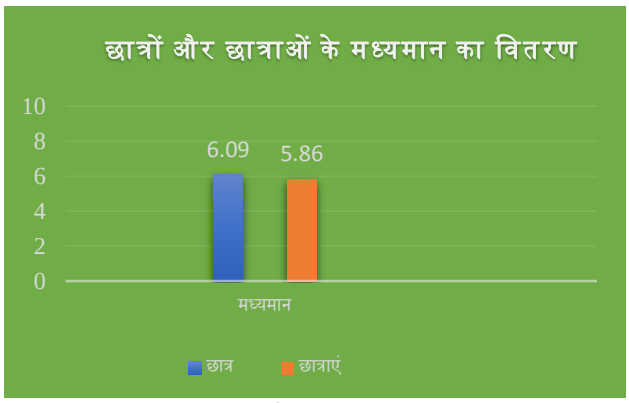

चित्र 3.3

सारणी- 3.4 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कार्यकारिणी सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	8.93	3.02	0.38	1.1	1.97 =(238)05. 2.60 =(238)01.	असार्थक
छात्राएं	120	8.51	2.94				

उपरोक्त सारणी 3.4 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के कार्यकारिणी सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 8.93 तथा 8.51, मानक विचलन 3.02 तथा 2.94 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.38 है । इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 1.10 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है । अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है । इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की कार्यकारिणी सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है ।

इन छात्रों और छात्राओं की कार्यकारिणी सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.4 में दिखाया गया है ।

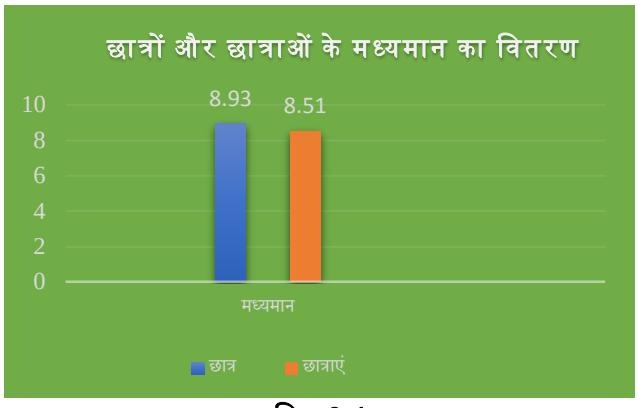

चित्र 3.4

सारणी- 3.5 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की गृहधारक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	4.66	2.47	0.35	1.46	1.97 =(238)05. 2.60 =(238)01.	असार्थक
छात्राएं	120	5.17	2.91				

उपरोक्त सारणी 3.5 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के गृहधारक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 4.66 तथा 5.17, मानक विचलन 2.47 तथा 2.91 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.35 है। इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 1.46 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है। अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की गृहधारक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

इन छात्रों और छात्राओं की गृहधारक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.5 में दिखाया गया है।

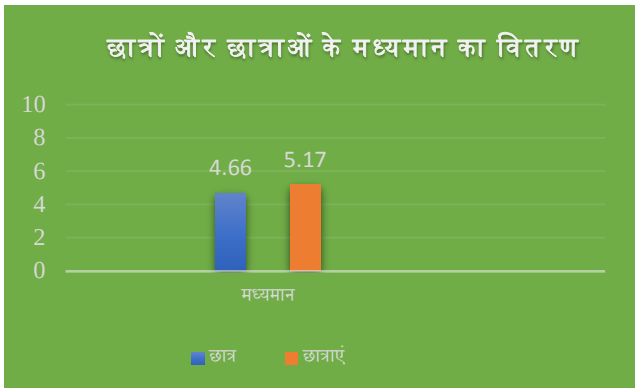

चित्र 3.5

सारणी- 3.6 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की साहित्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	8.67	4.32	0.59	0.75	1.97 $=_{(238)}$05. 2.60 $=_{(238)}$01.	असार्थक
छात्राएं	120	9.11	4.87				

उपरोक्त सारणी 3.6 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के साहित्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 8.67 तथा 9.11, मानक विचलन 4.32 तथा 4.87 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.59 है। इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 0.75 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है। अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की साहित्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

इन छात्रों और छात्राओं की साहित्यिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.6 में दिखाया गया है।

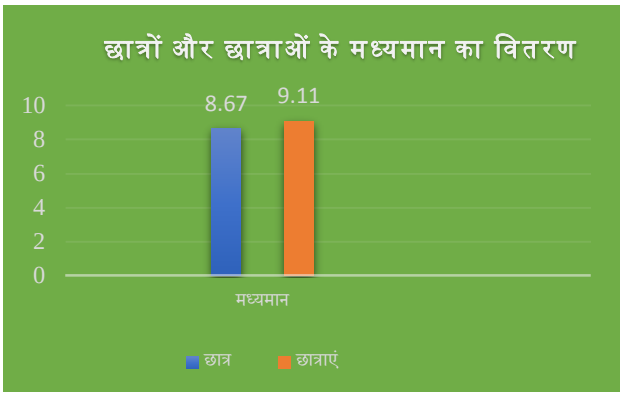

चित्र 3.6

सारणी- 3.7 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	9.97	4.76	0.56	1.13	1.97 $=_{(238)}$05. 2.60 $=_{(238)}$01.	असार्थक
छात्राएं	120	9.34	4.13				

उपरोक्त सारणी 3.7 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के वैज्ञानिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 9.97 तथा 9.34, मानक विचलन 4.76 तथा 4.13 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.56 है। इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 1.13 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से कम है। अतः यह .05 स्तर पर असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

इन छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.7 में दिखाया गया है।

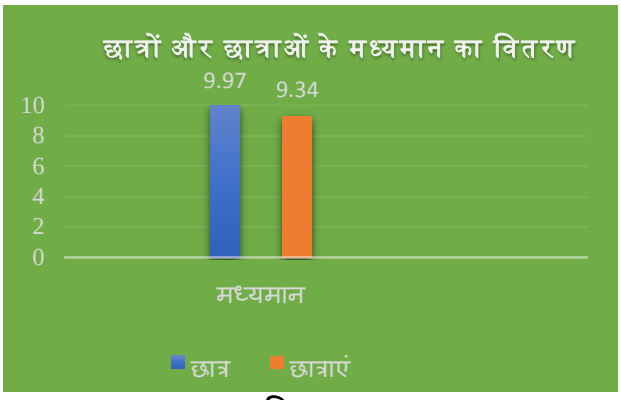

चित्र 3.7

सारणी- 3.8 माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	N	M	S.D.	σ_D	C.R. का परिगणित मान	C.R. का सारणी मान	सार्थकता का स्तर
छात्र	120	7.92	4.23	0.53	2.58	1.97 =(238)05. 2.60 =(238)01.	0.05
छात्राएं	120	6.55	3.98				

उपरोक्त सारणी 3.8 को देखने से पता चलता है कि छात्रों और छात्राओं के सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 7.92 तथा 6.55, मानक विचलन 4.23 तथा 3.98 एवं इन दोनों के लिए मानक त्रुटि का मान 0.53 है। इस आधार पर परिगणित C.R. का मान 2.58 है जो .05 स्तर के सार्थकता के सारणी मान 1.97 से अधिक है। अतः यह .05 स्तर पर सार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना: 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को अस्वीकार किया जाता है। अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में सार्थक अंतर है।

इन छात्रों और छात्राओं की सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि के मध्यमान को चित्र 3.8 में दिखाया गया है।

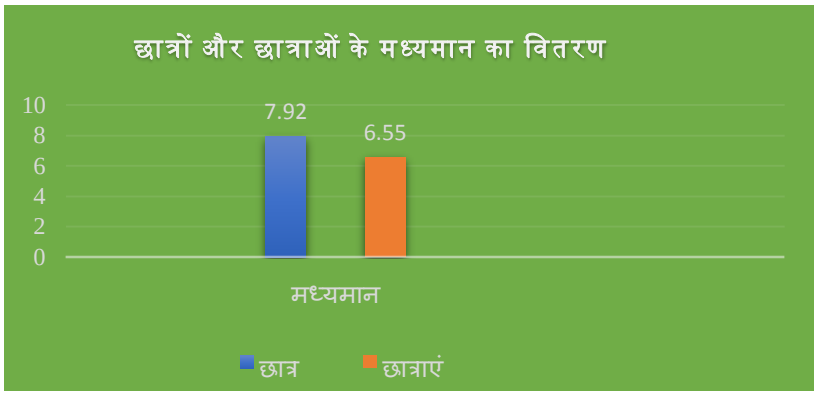

चित्र 3.8

निष्कर्ष एवं सुझाव :

वर्तमान अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की विभिन्न व्यवसायों के प्रति अभिरुचि भिन्न-भिन्न है। कुछ व्यवसायों जैसे वैज्ञानिक, साहित्यिक इत्यादि में विद्यार्थी बहुत ज्यादा रूचि रखते हैं जबकि कुछ अन्य व्यवसायों जैसे गृहधारक, कृषि इत्यादि में अपेक्षाकृत कम रूचि होती है। साथ ही

छात्रों और छात्राओं की व्यावसायिक अभिरुचि में कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया । केवल उनकी सामाजिक सम्बन्धी व्यावसायिक अभिरुचि में ही सार्थक अंतर मिला।

प्रस्तुत अध्ययन को केवल शिक्षा के माध्यमिक स्तर तक ही किया गया है । इसे शिक्षा के उच्च स्तर पर भी किया जाना चाहिए । साथ ही व्यावसायिक अभिरुचि के साथ अन्य चरों जैसे समायोजन, व्यक्तित्व, संवेगात्मक बुद्धि, आकांक्षा-स्तर इत्यादि का अध्ययन किया जाना प्रासंगिक होगा ।

शैक्षिक महत्त्व:

इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि यदि विद्यार्थियों की विभिन्न व्यवसायों के प्रति अभिरुचि को माध्यमिक स्तर पर ही ज्ञात कर उन्हें उनकी अभिरुचि के अनुसार उचित मार्गदर्शन एवं सुविधाएँ दिया जाये तो वे शिक्षा के उच्च स्तर पर सही पाठ्यक्रम का चुनाव कर सकेंगे । फलस्वरूप उन्हें अपने भावी जीवन में जीविकोपार्जन की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा । साथ ही शैक्षिक बेरोजगारी की समस्या का भी बहुत हद तक समाधान संभव हो जायेगा ।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची:

1. त्रान, सी.एल. (2022).एजुकेशनल इंटरेस्ट एंड वोकेशनल इंटरेस्ट इन रिलेशन टू अकेडमिक अचीवमेंट ऑफ द सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन मेघालया. शोध-ग्रन्थ. शिल्लोंग.नार्थ-इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी.
2. त्रिपाठी, सी. एवं एन. श्रीवास्तव. (2017). अ कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ सी.बी.एस.ई. एंड यू.पी. बोर्ड स्टूडेंट्स एट सेकेंडरी लेवल. शोध-पत्र. आई.जे.सी.आर.टी. वॉल्यूम 5.
3. सिंह, ए.के. (2015). शिक्षा मनोविज्ञान. पटना: भारती भवन.
4. सिंह, ए.के. (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ. पटना: मोतीलाल बनारसीदास.
5. गुप्ता, एस.पी. (2015). अनुसन्धान संदर्शिका. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.
6. शर्मा, आर.ए. (2014). शिक्षा अनुसन्धान. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो.
7. सारस्वत, एम. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान की रुपरेखा. लखनऊ: आलोक प्रकाशन.
8. पाठक, पी.डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
9. गुप्ता, एस.पी. (2009). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.
10. सुल्ताना, आर. (2002). अ कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ द स्टूडेंट्स ऑफ नाइन्थ स्टैण्डर्ड ऑफ उर्दू एंड मराठी मीडियम स्कूल्स ऑफ औरंगाबाद सिटी. शोध-ग्रन्थ. औरंगाबाद: डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर मराठवाडा यूनिवर्सिटी.
11. कपिल, एच.के. (2000). सांख्यिकी के मूल तत्व. आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर.
12. राय, पी.एन. (1999). अनुसन्धान परिचय. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.